परीक्षा की घड़ी

प्रेमा रंगाचारी

तीन नेत्रहीन व्यक्तियों की कहानी, जिसमें वे अपने-अपने अनुभवों के अंशों को जोड़कर एक हाथी की सम्पूर्णता को समझने का प्रयास करते हैं, शिक्षकों द्वारा किए जाने वाले उन प्रयासों का उदाहरण है जिसके माध्यम से वे विद्यार्थियों के ज्ञान के आधार पर बुद्धिमत्ता को समझने का प्रयत्न करते हैं। आकलन से विद्यार्थी के कुल व्यक्तित्व का एक कण मात्र सामने आता है।

आकलन का शाब्दिक अर्थ है मूल्यांकन या परिणाम का निर्णय करना। यह शिक्षा के क्षेत्र में विकास के विभिन्न पहलुओं के परीक्षण का एक रूप है। आकलन से विद्यार्थी के शारीरिक, भावनात्मक एवं बौद्धिक विकास के बारे में पता चलता है।

आज आकलन एक बुरा शब्द बन गया है। यह तनावग्रस्त बच्चों, माता-पिता एवं शिक्षकों का चित्र हमारे समक्ष रखता है जो किसी भी कीमत पर परीक्षण के अपेक्षित लक्ष्यों को पाने में लगे हुए हैं। परीक्षण एक ऐसा उपकरण है जो बच्चों के बारे में निर्णय लेकर उन पर एक ठप्पा लगा देता है; जिसके कारण वे जीवन भर के लिए आहत हो सकते हैं। नतीजतन आकलन शिक्षा तंत्र के लिए एक अभिशाप बन गया है जबकि इसे तो बेहतर अधिगम की प्रेरणा का कारण होना चाहिए था, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने का उपकरण बनना चाहिए था और बच्चों को व्यक्तिगत रूप से समर्थन देने का जरिया बनना चाहिए था।

"कल्पना ज्ञान से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। ज्ञान तो सीमित है जबकि कल्पना पूरी दुनिया को गले लगाती है, प्रगति को प्रोत्साहित करती है, विकास को जन्म देती है।"-अल्बर्ट आइन्स्टीन

इस दिशा में परिवर्तन लाने से निश्चय ही अधिगम की प्रक्रिया के परिप्रेक्ष्य में भी अन्तर आएगा; और इससे प्रत्येक शिक्षार्थी की जरूरतों पर उचित रूप से ध्यान दिया जा सकेगा। यह प्रवृत्यात्मक परिवर्तन हमें अपेक्षित लक्ष्यों की ओर बढ़ने की दिशा में आगे ले जाएगा।

यदि आकलन से मिलने वाली जानकारी का उपयोग शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए फीडबैक के रूप में किया जाए ताकि वे अपना और एक-दूसरे का आकलन स्वयं कर सकें और उसके अनुसार अपने शिक्षण व अधिगम की गतिविधियों को प्रभावकारी बना सकें तो इस प्रकार का आकलन सहायक हो सकता है। ऐसे आकलन रचनात्मक आकलन बन जाते हैं जिनमें प्रमाणों का प्रयोग वास्तव में शिक्षण के अनुकूलन के लिए किया जाता है ताकि अधिगम की जरूरतों को पूरा किया जा सके।

हम अधिगम व प्रदर्शन का आकलन क्यों करें? इन आकलनों से किसे लाभ होता है?

इसमें कोई सन्देह नहीं कि मूल्यांकन की रणनीति के मूल में शिक्षार्थी है। आकलन से शिक्षक व विषय विशेषज्ञ, स्कूल व संस्थाओं को भी लाभ होता है।

अधिगम व प्रदर्शन के आकलनों के क्या लाभ हैं?

1. यह अधिगम और प्रदर्शन में अन्तर की पहचान करता है।
2. अधिगम को आंककर सुधार के उपाय सुझाता है।
3. विद्यार्थियों को आगे की यात्रा के लिए समर्थ बनाता है।
4. आगे के अधिगम के लिए प्रोत्साहन और सहायता देता है।
5. फीडबैक से शिक्षण की विधियों को नया स्वरूप देने

में मदद मिलती है।

6. अवधारणा/प्रकरण की उपयुक्तता का मूल्यांकन करता है।

आकलन शिक्षक व अधिगम की प्रक्रिया को बनाने वालों तथा विद्यार्थी यानि अधिगम की प्रक्रिया में भागीदार बच्चे के बीच एक सहयोगात्मक प्रक्रिया है। फीडबैक की प्रक्रिया के माध्यम से किया गया आकलन विद्यार्थियों को अपने अधिगम के प्रति जिम्मेदार बनाता है। परिणामस्वरूप शिक्षक अधिगम के उचित उपायों के विकास में और अधिक जिम्मेदार हो जाते हैं।

एक शिक्षक का लक्ष्य यह होना चाहिए कि वह आकलन का उपयोग विद्यार्थी के अधिगम को प्रोत्साहित करने, आत्मनिरीक्षण को बढ़ावा देने और उन्हें शिक्षित करने के लिए करे ताकि विद्यार्थी स्वत: ही बेहतर शिक्षार्थी बन जाए।

जब हम अधिगम के आकलन और अधिगम के लिए आकलन की बात करते हैं तो इसमें रूब्रिक्स की क्या भूमिका है?

रूब्रिक स्कोरिंग का एक उपकरण है जो किसी काम के मानदण्डों को सूचीबद्ध करता है; यह गुणवत्ता के उत्कृष्ट से असन्तोषजनक तक के कोटि निर्धारण (ग्रेडेशन) को भी स्पष्ट करता है।

शिक्षण और आकलन के लिए रूब्रिक्स बहुत शक्तिशाली उपकरण हैं। वे विद्यार्थियों के प्रदर्शन में सुधार कर सकते हैं और उसकी निगरानी करने के लिए शिक्षक की अपेक्षाओं को स्पष्ट करके विद्यार्थी को यह बता सकते हैं कि उन अपेक्षाओं को कैसे पूरा किया जाए। इसके परिणामस्वरूप विद्यार्थी के काम व अधिगम में उल्लेखनीय सुधार होता है। इस प्रकार रूब्रिक्स का प्रयोग गुणवत्ता को निश्चित करता है।

दूसरे, रूब्रिक्स से विद्यार्थी अपने काम के बारे में ईमानदारी व विस्तार के साथ निर्णय ले सकते हैं और इस प्रकार वे गुणवत्ता के बारे में और भी जागरूक होते हैं। जब इसका प्रयोग अपने और साथियों के आकलन के लिए किया जाता है तो विद्यार्थी अपनी गलतियों को समझ पाते हैं और अपने व दूसरों के काम से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान कर पाते हैं। इससे उनमें जिम्मेदारी की भावना बढ़ जाती है और वे अपने काम के मालिक खुद बनते हैं (ओनरशिप की भावना)।

तीसरे, रूब्रिक्स से शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों के काम के आकलन व मूल्यांकन में लगने वाले समय में कमी आती है। शिक्षक भी यह महसूस करते हैं कि जब किसी काम का आकलन विद्यार्थी स्वयं और उनके साथी करते हैं तो उनके लिए कुछ कहने की गुंजाइश बहुत कम रह जाती है।

रूब्रिक्स से विद्यार्थी के गुणों व सुधार के लिए आवश्यक क्षेत्रों के बारे में जानकारीपूर्ण फीडबैक मिलता है।

चौथे, शिक्षकों को रूब्रिक्स इसलिए पसन्द है क्योंकि यह स्वभावत: विषम कक्षाओं को समायोजित कर लेता है।

विद्यार्थी महसूस करते हैं कि रूब्रिक्स उनके काम का सटीक मूल्यांकन करते हैं। माता-पिता ने महसूस किया कि रूब्रिक्स से उन्हें वास्तव में यह पता चला कि सफल होने के लिए उनके बच्चे को क्या करना चाहिए। अच्छा यह होगा कि ऐसे रूब्रिक्स बनाए जाएँ जो पाठ्यक्रम और शिक्षण शैली के उपयुक्त हों। इसे बनाने के लिए भागीदारीपूर्ण प्रक्रिया को अपनाना चाहिए जिसमें विद्यार्थी भी शामिल हों।

इसे कैसे बनाया जाए:

1. विद्यार्थियों के सामने एक बहुत अच्छा और एक साधारण-सा काम रखिए ताकि उन्हें अच्छे काम की विशिष्टताओं को पहचानने में सहूलियत हो।
2. उन मानदण्डों या विशिष्टताओं को सूचीबद्ध कीजिए जो अच्छे काम को सूचित करती हैं।
3. गुणवत्ता के सबसे अच्छे और सबसे बुरे स्तर का वर्णन कीजिए और मध्यम स्तर में सामने आने वाली आम समस्याओं को लेकर भरिए।
4. अभ्यास : रूब्रिक का उपयोग करके शुरू में प्रस्तुत काम का मूल्यांकन कीजिए।

5. स्वयं और साथियों के आकलन का प्रयोग कीजिए।
6. साथियों से मिले फीडबैक के आधार पर अपने आकलन में संशोधन कीजिए।
7. इसी रूब्रिक की सहायता से आकलन सिखाइए।

रूब्रिक बनाना मुश्किल काम है लेकिन उन्हें प्रयोग में लाना आसान है। जब रूब्रिक तैयार हो जाते हैं तो विद्यार्थियों को उसकी एक प्रति दे दी जाती है जिससे वे किसी प्रायोजना विशेष पर अपनी प्रगति का आकलन कर सकें। विद्यार्थियों के आकलन में ग्रेड नहीं होने चाहिए। क्योंकि आकलन का उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी अधिक सीखें और बेहतर काम करें। आत्म-आकलन की ग्रेडिंग करने का अर्थ होगा विद्यार्थियों की ईमानदारी के साथ समझौता करना।

जब साथी काम का आकलन करते हैं तो उन्हें इस पर हस्ताक्षर करने होते हैं ताकि शिक्षक यह देख सकें कि वे कितने निष्पक्ष और सही ढंग से आकलन कर पाए हैं। फीडबैक के समर्थन के लिए शिक्षक उनसे स्पष्टीकरण एवं सबूत माँग सकते हैं।

अन्ततः रूब्रिक को हर प्रयास की सर्वश्रेष्ठ बात को उजागर करना चाहिए और गुणवत्ता बनाए रखनी चाहिए। रूब्रिक को गुणवत्ता के स्तर को बनाए रखने में मदद करनी चाहिए। सबसे महत्त्वपूर्ण रूब्रिक वह होगा जो प्रत्येक विद्यार्थी की जरूरत के हिसाब से बनाया गया हो।

21 वीं सदी की माँगें तेजी से बदल रही हैं और हमारी शिक्षा को जीवित रहने के कौशलों का विकास करना होगा; जिसके तहत इन बातों को जानना शामिल है-सोचना, तर्क करना, विश्लेषण करना, समस्याएँ सुलझाना, सबूतों को तौलना और प्रभावशाली ढंग से सम्प्रेषण करना। ये बातें सभी के लिए आवश्यक कौशल हैं। परीक्षण के उपकरण भी इस प्रकार से तैयार किए जाने चाहिए कि उनमें ये कौशल शामिल हों ताकि परीक्षण व्यापक बन सके।

वर्तमान लक्षण जीवन्त मस्तिष्क और बेजान कम्प्यूटर की समानता को इंगित करते हैं। किसी विशेष रूप में व्यवहार करने पर आज "हार्ड वायर्ड" होना या "प्रोग्राम्ड" जैसे शब्दों का प्रयोग आम हो गया है। लेकिन हमारा जीवन्त मन किसी धातु का अंश नहीं है, "यह तो ऐसे जीवन्त लोगों से बना है जो भावनात्मक इरादों और सम्बन्धों से संचालित होते हैं।"

यहाँ कक्षा एक के लिए विद्या वनम में शिक्षकों द्वारा बनाए गए रूब्रिक्स के कुछ नमूने दिए गए हैं।

कक्षा का स्तर-एक, आयु-5, समूह कार्य-

काम : कक्षा को व्यवस्थित और साफ करना है। बच्चों को समूहों में कार्यवाही की योजना बनाने को कहा गया।

प्रतिक्रिया : कुछ बच्चों ने निर्णय लिया कि काम की शुरुआत कैसे की जाए, कुछ बच्चे अनिच्छुक से नजर आए।

मानदण्ड	समूह 1	समूह 2	समूह 3
जिम्मेदारी	विद्यार्थियों ने शिक्षकों के निर्देशों का अनुसरण किया और जिम्मेदारी ली	साथियों का अनुसरण किया और उनके नेतृत्व में आगे बढ़ने को तैयार	भाग नहीं लिया, कोई रुचि नहीं दिखाई
नियोजन	समूह ने कार्यवाही के क्रम को तय किया, कामों को प्राथमिकता दी और उसका निष्पादन बढ़िया तरीके से किया	समूह के पास अपनी योजना नहीं थी, लेकिन उन्होंने अपने साथियों की योजना का अनुसरण किया	इस समूह ने दूसरों के काम और योजना का अवलोकन किया, लेकिन जो कुछ हो रहा था उस पर बहुत कम ध्यान दिया

व्यवस्था	डेस्कों और बस्तों को यथास्थान रखा, कागज उठाकर रद्दी की टोकरी में डाले, कक्षा में झाड़ू लगाई, झाड़ू और कूड़े के तसले को अपनी जगह पर रखा	जिस समूह ने काम शुरू किया था, उसकी सहायता की, अपनी ओर से कुछ नहीं किया, पर दूसरों का अनुसरण बेहद सतर्कता के साथ किया	कुछ बच्चों ने कुछ विशेष कामों में रुचि दिखाई जैसे डेस्कें जमाना
व्यक्तिगत सफाई	काम पूरा होने के बाद समूह ने हाथ-पैर धोए और दूसरों से भी ऐसा करने के लिए कहा	हाथ-पैर धोने में पहले समूह का अनुसरण किया	यह समूह हाथ-पैर धोने की गतिविधि में भाग लेने के लिए बहुत उत्सुक था तथा इस गतिविधि में भाग लिया
नेतृत्व	वे हर काम को करने में अगुआ रहे	वे अगुआ तो नहीं थे पर उन्होंने दूसरों द्वारा बताए गए रास्ते का अनुसरण किया	कुछ लोग अगुआ होने को तैयार थे पर अन्य लोगों ने प्रयास नहीं किया

कक्षा पाँच के विद्यार्थियों द्वारा समूह गतिविधि, वाद-विवाद एवं समूह चर्चा के लिए रूब्रिक, आयु 10 + से 12.

वनोन्मूलन की बुराइयों का वर्णन करने वाला रोल प्ले

रोल प्ले के पात्र: पेड़, गाय, कौआ, लकड़हारा, पुजारी और एक टोपी विक्रेता

मानदण्ड	4	3	2	1
रोल की सत्यता एवं विश्वसनीयता	यथार्थवादी और पात्र के साथ स्थिर	सामान्यतया यथार्थवादी पर पात्र के साथ स्थिर नहीं	अकसर यथार्थवादी आंशिक रूप से स्थिर	कभी-कभार ही विश्वसनीय और पात्र के साथ सत्यता नहीं
बोलने की स्पष्टता	बोलना स्पष्ट और समझने में आसान है	अधिकतर समय बोलना स्पष्ट पर कभी-कभी समझने में कठिनाई क्योंकि वॉल्यूम कम था	कभी-कभी दबी आवाज के कारण बात समझ में नहीं आई	बोलने में स्पष्टता नहीं है
भावाभिव्यक्ति एवं शारीरिक मुदाएँ	भूमिका के उपयुक्त चेहरे के भाव और मुद्राएँ	चेहरे के भाव आवाज की अभिव्यक्ति पर हावी	आवाज और चेहरे के भाव और मुद्राएँ अतिशयोक्तिपूर्ण हैं	कभी-कभी मुद्राएँ और आवाज उपयुक्त
प्राप्त ज्ञान	रोल प्ले के उद्देश्य एवं अलग-अलग पात्र रोल प्ले के उद्देश्य को किस प्रकार से देखते हैं-इन बातों की स्पष्ट व्याख्या करने में सक्षम	पात्र जिन विभिन्न तरीकों से थीम को देखते हैं-उनकी सराहना करने में सक्षम लेकिन औचित्य साबित करने में असमर्थ	केवल एक पात्र की व्याख्या करने और समस्या के समाधान का एक तरीका बताने में समर्थ	रोल प्ले के सम्बन्ध में भूमिका की व्याख्या करने में असमर्थ

समूह गतिविधि: तमिल साहित्य में वर्णित पाँच विभिन्न भूमि-रूपों का अध्ययन, आयु समूह: 10 से 12

मानदण्ड	1	2	3	4
निर्णय लेना	निर्णय लेने में एक व्यक्ति हावी होता है	कुछ विद्यार्थी निर्णय लेने में योगदान देते हैं	अधिकांश विद्यार्थी निर्णय लेने में योगदान देते हैं	सभी विद्यार्थी निर्णय लेने में योगदान देते हैं
सामाजिक सहभागिता	विद्यार्थी बीच-बीच में व्यवधान डालते हैं और दूसरों के विचारों को नीचा दिखाते हैं, विद्यार्थी न तो प्रश्न पूछते हैं और न ही स्पष्टीकरण माँगते हैं	विद्यार्थी समूह चर्चा पर ध्यान देते हैं, कुछ विद्यार्थी सवाल पूछते हैं और दूसरों की टिप्पणियों के आधार पर तर्क भी प्रस्तुत करते हैं	विद्यार्थी की शारीरिक और मौखिक प्रतिक्रियाओं से उनके सक्रिय रूप से सुनने का संकेत मिलता है, विद्यार्थी सवाल पूछते हैं और दूसरों की टिप्पणियों की सहायता से चर्चा को आगे बढ़ाते हैं	विद्यार्थी दूसरों के विचारों का सम्मान करते हैं और उन्हें प्रोत्साहित करते हैं, वे प्रश्न पूछते हैं, स्पष्टीकरण माँगते हैं, दूसरों की टिप्पणियों के आधार पर तर्क भी प्रस्तुत करते हैं
योगदान	विद्यार्थी किसी सकारात्मक रूप से योगदान नहीं देते	कुछ विद्यार्थी सकारात्मक रूप से योगदान देते हैं	अधिकतर विद्यार्थी सकारात्मक रूप से योगदान देते हैं	विद्यार्थी लगातार योगदान देते हैं
कार्य करते समय व्यवहार	विद्यार्थी लगातार चिन्तन नहीं करते हैं	विद्यार्थी केवल कुछ ही समय तक काम करते हैं और शिक्षकों से सहायता की अपेक्षा करते हैं	अधिकतर विद्यार्थी अपनी शक्ति का आकलन करने में सक्षम हैं और कार्य पूरा करने की दिशा में काम करते हैं	विद्यार्थी कार्य करते समय एक जैसे व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं
समूह संरचना और कार्य पद्धति	वे काम को पूरा नहीं करते	कार्यों और जिम्मेदारियों का विभाजन अक्षमतापूर्वक किया गया, विद्यार्थी समय बर्बाद करते हैं, काम के चरणों को क्रमबद्ध करने की योजना बनाने में असमर्थ हैं इसलिए बाद में काम को पूरा करने में जल्दबाजी करते हैं	समूह के नेता जिम्मेदारियों और कार्यों को बाँटते हैं, विद्यार्थी काम को चरणों को क्रमबद्ध करके उसे पूरा करते हैं	आपस में काम बाँटते हैं और काम को समय पर पूरा करते हैं
प्रदर्शन	सहायता मिलने पर भी काम समय पर पूरा नहीं हुआ	पूरा किए गए कार्य के कुछ हिस्सों की व्याख्या करने में समर्थ-उन क्षेत्रों की जिन्हें विद्यार्थियों ने समझ लिया है	विचार के विकास को क्रमश: प्रभावशाली रूप से बताने में समर्थ और समूह कार्य के उद्देश्य का वर्णन करने में सक्षम	समूह के सदस्य जिम्मेदारियाँ और भूमिकाएँ लेते हैं; और अपने कामों को स्पष्ट और संगत चरणों में पूरा करते हैं

प्रेमा रंगाचारी *विद्या वनम स्कूल की प्रमुख सलाहकार हैं। यह स्कूल अनइकट्टी, तमिलनाडु के आदिवासी और अल्पा. धिकार वाले बच्चों के लिए है जिसे भुवना फाउण्डेशन द्वारा चलाया जा रहा है। उनसे premarangachary@yahoo.co.in पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल*